पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

महाकवि कालिदास कृत 'मेघदूत' में पर्वतीय यात्रा का अनुशीलन

डॉ. हेतराम

हिंदी शिक्षक

शिक्षा विभाग, केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़

ईमेल : hindijudwaan@gmail.com

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे।।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।। (विष्णुपुराण)

{अर्थात् देवगण निरन्तर यही गान करते हैं कि जिन्होंने स्वर्ग और मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए भारतभूमि में जन्म लिया है, वे मनुष्य हम देवताओं की अपेक्षा अधिक धन्य तथा भाग्यशाली हैं।}

शोध सारांश : विश्व प्रसिद्ध महाकवि कालिदास की रसवादी कला उनके अप्रतिम कलात्मक सौंदर्य के दर्शन कराती है,इसलिए महाकवि कालिदास को अनेक आलोचकों ने रस का संपूर्ण कवि, सर्वांग रस का सिद्ध कवि कहा है। कालिदास की काव्य साधना भौगोलिक दृष्टि से भी पूर्ण परिपाक दर्शन करवाती है। कालिदास कृत मेघदूत एक दूत काव्य है,इस काव्य में एक निर्वासित यक्ष द्वारा अपने देश अलकापुरी में अपनी प्रेयसी यक्षी को संदेश भेजने की काव्यांजलि में कवि भूगोल के प्रस्तोता जान पड़ते हैं, अतः कालिदास की साहित्य साधना में भौगोलिक विद्वता को चिह्नित करती हैं। 'मेघदूत' काव्य में कवि भारत के भौगोलिक सौंदर्य को प्रस्तुत करते हुए संपूर्ण भारतवर्ष का दर्शन करवा रहा है। विशाल भारत के विभिन्न स्थलों का साक्ष्य

का यहाँ सजीव वर्णन हुआ है। यहां आम्रकूट पर्वत, विंध्याचल पर्वत और विंध्याचल से होता हुआ उज्जैन महाकाल दर्शन शिप्रा स्नान कुंभ मेले का महत्त्व से आगे बढ़ते हुए देवगिरि पर्वत, देवगिरि से कुरुक्षेत्र और कुरुक्षेत्र से हिमालय की ओर हिमालय से कैलाश पर्वत- मानसरोवर और अलकापुरी की यात्रा को सुंदर काव्यांजलि में प्रस्तुत किया है। इससे स्पष्ट है कि स्वयं कालिदास ने उक्त स्थलों की यात्राएं की हैं क्योंकि ऋतु अनुसार प्रसंग प्रस्तुति, भिन्न- भिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति एवं उसके महत्त्व को सौम्य शब्दावली में चित्रित किया है जो सच्चा यायावर द्वारा ही संभव हो सकता है।

बीज शब्द : भौगोलिक सौंदर्य, काव्यांजलि, दैदीप्यमान, दर्शन, प्रस्तोता, सिद्धस्थ, प्रतिनिधित्व।

मूल आलेख

भारतवर्ष की उपमा में अनेक ऋषि-मुनियों ने अपनी काव्यांजलि प्रस्तुत की हैं। महाकवि कालिदास ने भारतवर्ष की प्रशंसा को अपनी भारत भूमि की यात्रा को यक्ष के संदेश के माध्यम से मेघ को दूत बनाकर दूतकाव्य “मेघदूत” में भारत के भिन्न- भिन्न स्थलों का सजीव चित्रण किया है। अमर भारतीय साहित्य और संस्कृति के पोषक, रस विलास, रस सिद्ध, साहित्य जगत् के दैदीप्यमान भास्कर महाकवि कालिदास ने संपूर्ण भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी लेखनी से नैतिकता का आदर्श प्रस्तुत किया। कला व संस्कृति को शब्दों में पिरोते हुए सुंदर काव्य संसार को प्रदान किए हैं।विश्व प्रसिद्ध महाकवि कालिदास की रसवादी कला उनके अप्रतिम कलात्मक सौंदर्य के दर्शन कराती है, इसलिए महाकवि कालिदास को अनेक आलोचकों ने रस का संपूर्ण कवि, सर्वांग रस का सिद्ध कवि कहा है। कालिदास की काव्य साधना भौगोलिक दृष्टि से भी पूर्ण परिपाक दर्शन करवाती है। कालिदास कृत मेघदूत एक दूत काव्य है, इस काव्य में एक निर्वासित यक्ष द्वारा अपने देश अलकापुरी में अपनी प्रेयसी यक्षी को संदेश भेजने की काव्यांजलि में कवि भूगोल के प्रस्तोता जान पड़ते हैं, अतः कालिदास की साहित्य साधना में भौगोलिक विद्वता को चिह्नित करती हैं। मेघदूत काव्य में कवि पूर्व मेघ

में भारत के भौगोलिक सौंदर्य को प्रस्तुत करते हुए संपूर्ण भारतवर्ष का दर्शन करवा रहा है। महाकवि कालिदास ने भारत भ्रमण की अपनी यात्रा का चित्रण मेघ के माध्यम से भारत देश की भौगोलिक सुंदरता को अपने काव्य में सजाया है। अलकापुरी से निर्वासित होकर यक्ष रामगिरि पर्वत पर निष्कासन समय व्यतीत करता हुआ,आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश में उड़ते-घुमड़ते चलते बादलों को जब देखता है तो उन्हें दूत बनाकर अपनी प्रेमिका यक्षी तक संदेश भेजना चाहता है,क्योंकि इस पर्वत पर रहते उसे कोई भी संदेश वाहक वहां नहीं मिलता है। मेघों को रामगिरि में अलकापुरी तक जाने का रास्ता बताते हुए रामगिरि से अलकापुरी तक की यात्रा का दर्शन मेघ को करवाता हुआ अलकापुरी के मार्ग में पर्वत, पठार मैदान, जंगल,नदियों के साथ- साथ भारत की जलवायु और मौसम का भी अनन्य परिचय करवाता है। अतः कवि साहित्यधर्मिता का धनी होने के साथ- साथ भौगोलिक दृष्टि से भी परम ज्ञाता है। इससे हम समझ सकते हैं कि कालिदास का मेघदूत भारतीय संस्कृति की यात्रा का प्रत्यक्ष चित्रण का साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि कालिदास ने भारत वर्ष का भ्रमण कर भारतीय संस्कृति को एक सिद्धस्थ कवि होने के साथ- साथ पारंगत यात्री भूगोल प्रस्तोता के रूप में सिद्ध करती हैं। महाकवि कालिदास कृत मेघदूत में पर्वतीय यात्रा में अनेक पर्वत, पठार, मैदान, जंगल,नदियों के साथ- साथ भारत की जलवायु और मौसम के भिन्न भिन्न दृश्य आते हैं। यहाँ भारत वर्ष के सौन्दर्य के उपमान पर्वतों की यात्रा का वर्णन किया जा रहा है।

चित्रकूट पर्वत/ रामगिरि पर्वत - मेघदूत के पहले और बाहरवें श्लोक में रामगिरि पर्वत का वर्णन किया गया है। इन श्लोकों में भगवान श्री राम के वनवास की कथा का संकेत किया है, क्योंकि कवि रामगिरि पर्वत का परिचय राम के पद चिह्नों का उल्लेख करते हुए कहता है कि भगवान श्रीराम वनवास काल के दौरान यहां ठहरे थे, इसलिए यह पर्वत परम पूजनीय हो गया। यह पर्वत नागपुर के 24 मील उत्तर वर्तमान का रामटेक पर्वत है। मेघदूत का आरंभ रामगिरि पर्वत से होता है। यद्यपि मेघदूत के पहले श्लोक में रामगिरि पर्वत के संदर्भ में कवि “रामगिर्य्याश्रमेषु” कहकर स्पष्ट करता है।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येन भर्तुः।

यक्षश्चक्रे जनकतनधास्नानपुण्योदकेषु स्निग्धच्छायातरुषु वसति रामगिर्य्याश्रमेषु॥1

महाकवि चित्रकूट की विशालता का परिचय बाहरवें श्लोक में देता हुआ सन्देश वाहक मेघ को यक्ष कहता है,हे मेघ! यह पर्वत श्री रामचंद्र जी के पद चिह्नों से पवित्र हो गया है और वर्षा काल में तुम्हारे समागम का सुख पाकर गर्म वाष्प को गलाकर शीतल स्नेह से भर दो।

आपृच्छश्व प्रिघसखममुं तुझ मालिङ्ग शैलं वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।

काले काले भवति भवतो यस्य संयोग मेत्य स्नेहव्यक्तिश्विरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम्॥12

कैलाश पर्वत- महाकवि कालिदास ने मेघदूत में सन्देश वाहक मेघ को दूत बनाकर जब अलकापुरी भेजा है वह अलकापुरी का स्थान हिमालय में स्थित कैलाश पर्वत को बतलाता हुआ कैलाश पर्वत की शोभा का वर्णन करता है। महाकवि कैलाश ने कैलाश पर्वत को स्फटिक से बने शैल पर्वत का उल्लेख करते हुए कैलाश पर्वत को सुशोभित किया है,जो निर्मल सास्वत हिम मंडित तथा हिमालय के उत्तर में स्थित हैं। कैलाश पर्वत पर भगवान शिव व माता पार्वती का निवास स्थान है। कवि ने इस पर्वत पर शिव के मित्र कुबेर का भी निवास बतलाया है।

तत्र व्यक्तं हृपदि चरणन्यासमर्धेन्दुमौलेः शश्वसिद्धैरुपचितबलिं भक्तिनम्रः परीयाः।

यस्मिन्दृष्टे करणविगमादूर्ध्वमुतपापाः संकल्पन्ते स्थिरगणपदप्राप्तये श्रद्दधानाः॥56

आम्रकूट पर्वत- विंध्याचल के पूर्वी भाग में आमों के आधिक्य के कारण नर्मदा नदी के गंतव्य मार्ग में आम्रकूट पर्वत है, जो आज वर्तमान में अमरकंटक नाम से जाना जाता है। यहां यक्ष मेघ के अमरावती जाते हुए इसी पर्वत पर अपनी थकान उतारने, आम्रकूट के रसीले आमों का रसास्वादन करते हुए और प्रकृति का सुंदर दर्शन कर आगे बढ़ने की बात कहता है। कवि ने इस पर्वत की उपमा में आम्रकूट पर्वत को पृथ्वी का तन बतलाया है। अमरकंटक ऊंचे शिखर

व घने काले घने वृक्षों वाला पर्वत है,इसका उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। अतः रामगिरि के पश्चात् आम्रकूट जाने का वर्णन है।

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तरस कामी नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।

आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं वक्रीडापरणलगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥2

विंध्याचल पर्वत- यक्ष मेघ को विंध्याचल पर्वत की ऊबड़ खाबड़ दोहरे रास्ते और दर्रे भरा पत्थरों से सज्जित विषम मार्ग अर्थात संकरे मार्ग का रास्ता बतलाता है। विंध्याचल से गुजरते हुए रेवा नदी आपको दिखाई देगी और आप रेवा का जल जो वन्य हाथियों के मद से वासित जामुन के कुंजों के कर से शांत वेग वाला रेवा नदी का जल लेकर आना।

तरास्तिक्तैर्वनगजमदर्वाशितं वान्तवृष्टि जम्नकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः।

अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्पति त्वां रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।।20

उज्जैन महाकाल दर्शन- महाकवि कालिदास उज्जैन सम्राट विक्रमादित्य के नवरत्नों में सर्वश्रेष्ठ कवि रहे हैं। इसके साथ- साथ उज्जैन को हम कालिदास नगरी के नाम से भी जानते हैं। परंतु कालिदास मेघदूत में उज्जैन को अपने सम्राट विक्रमादित्य की नगरी उल्लेखित न करते हुए उज्जैन को महाकाल की नगरी बतलाता हुआ मेघ को उज्जैन का परिचय करवाता है। महाकवि का यक्ष मेघ को कहता है कि महाकाल दर्शन करने कर स्वर्गीय सुख को प्राप्त होता है, क्योंकि पृथ्वी पर विराजित स्वर्ग का सौभाग्य उज्जैन नगर में स्वयं महाकाल हैं। यहां शिप्रा नदी के किनारे सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी उज्जैयिनी अतः यहां बारह वर्ष बाद कुंभ का मेला लगता है, भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में महाकाल के दर्शनमात्र से पापियों के पाप धुल जाते हैं। यहां स्वर्गीय जीवों के पुण्य क्षीण होने के कारण पृथ्वी पर उज्जैन आकर महाकाल दर्शन कर पुण्य प्राप्त करने का उल्लेख है। अतः महाकवि कालिदास ने मेघ को अलौकिक शक्ति के भंडार भगवान महाकाल दर्शन, शिप्रा स्नान व विश्राम कर आगे बढ़ने

का संदेश दिया है। संध्या आरती के दर्शन करने के पश्चात् अपने गंतव्य की ओर जाने को कहा है।

अप्यन्यस्मिन्जलधर महाकालमासाद्य काले स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः।

कुर्वन्संध्यावलिपव्हतां शूलिनः श्लाघनीया सामन्द्राणां फलमविकलं लफ्यते गर्जितानाम्।।35

देवगिरि पर्वत- यक्ष मेघ को उज्जैन से प्रस्थान करते हुए अगला पड़ाव देवगिरि पर्वत का बतलाता है। महाकवि कहते हैं, हे मेघ जब आप उज्जैन में महाकाल के दर्शन करके आगे बढ़ोगे तो आपको देवगिरि पर्वत दिखाई देगा। और वहां देवगिरि पर्वत पर तुम जल से वर्षा कर देना। वहां का वातावरण आनंद उत्सव मनाता हुआ आनंदोच्छ्वास हो जायेगा, पृथ्वी की महक कण- कण में व्याप्त होती हुई पूरी प्रकृति सुगंधित हो जाएगी। वहां भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय का वास है, यहां भगवान महादेव जी ने इंद्र की सेना की रक्षा के लिए आदित्य से अधिक तेज का होम किया था। उसी से इंद्र की सेना की रक्षा हुई थी, और महादेव तेजस्वी देवसेना की उत्पत्ति हुई थी। अतः आप देवगिरी को नमन करते हुए आगे बढ़ना।

तत्र स्कंद नियतवसतिं पुष्पमेघीकृतात्मा पुष्पासारैः स्नपयतु भवान्व्योमगङ्गाजलार्दै।

रक्षा हेतोर्नवशशिभृता वासवीनां चमूना मसत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः॥44

हिमालय पर्वत- हिमालय पर्वत पर हिमालय की अनेक पर्वत श्रृंखलाएं स्थापित हैं। अनेक नदियों का उद्गम स्थल हैं। हिमालय अखंड हिम शिखर हैं। इसी कारण हिमालय को पर्वतों का राजा कहा जाता है। हिमालय पर्वत हमारे भूमंडल पर भारत के पड़ोसी सात देशों में लंबी श्रंखला विद्यमान है। जबकि संपूर्ण भूमंडल की दृष्टि से पृथ्वी का मानदंड भी कहा जाता है। कालिदास ने भी हिमालय को पृथ्वी का मानदंड से सुशोभित किया है। हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएं शिवालिक कहलाती है। कवि कहता है, हे मेघ हिमालय की कंदराओं में ऋषि मुनि समाधिस्थ रहते हैं, यह अध्यात्म चेतना का केंद्र है, यहां ईश्वरीय शक्ति विद्यमान हैं। यह

अमूल्य रत्नों का भंडार हैं। यह पृथ्वी पर होकर भी स्वर्ग है, अतः हिमालय होते हुए जाएं तो इस स्वर्ग का सुख प्राप्त करें।

नं चेद्वाघौ सरति सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा बाधेतोल्काक्षपितच मरीवालभारो दुवाग्निः।

अर्हस्येनं शमयितुमलं वारिधारा सहस्त्रै -रापन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो द्युत्तमानाम्॥54

मानसरोवर दर्शन- कैलाश पर्वत पर स्थित मानसरोवर का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि मेघ कैलाश पर्वत पर आपके मित्र मानसरोवर विद्यमान हैं। आप मानसरोवर में नाना भांति की क्रीड़ाएं करना, अपने मन को प्रफुल्लित करना और मानसरोवर में खिले सुनहरे कमलो से भरे मानसरोवर का जल पीना, अपने सखा एरावत के मुंह पर कपड़ा झांपकर उसे प्रसन्न करना और कल्पवृक्ष के पत्तों को दुपट्टे की तरह ओढ़ते हुए आनंद हो आनंदित होना।

हेमाम्भोजमसविं सलिलं मानसरयाददानः कुर्वकामं क्षणमुखपटप्रीतिमरावतरय।
धुन्वन्कल्पद्रुमकिसलयान्यंशुकानीव वातै नानाचेष्टार्जलद ललितैर्निविशेस्तं नगेन्द्रम्||63

महाभारत युद्ध स्थल कुरुक्षेत्र और वेदवती सरस्वती नदी का वर्णन- महाभारत युद्ध स्थल कुरुक्षेत्र और वेदवती सरस्वती नदी का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास मेघ को महाभारत युद्ध स्थल कुरुक्षेत्र और वेदवती सरस्वती नदी के दर्शन कर मानसिक विप्सा को शुद्ध कर आगे बढ़ने का सन्देश देते हैं। महाकवि कहते हैं, हे मेघ जब तुम अलकापुरी की ओर प्रस्थान करोगे तो तुम्हें वेदवती सरस्वती नदी का मार्ग तुम्हारे पथ में आएगा। अर्थात् इसी स्थल पर महाभारत का युद्ध हुआ था जिसे तुम अपनी आंखों से दर्शन कर उसका सौभाग्य प्राप्त करना। वेदवती नदी सरस्वती स्वयं बलराम की पत्नी रेवंती के नेत्रों के समान सुंदर दिखाई देगी। हे मेघ आप उस सरस्वती नदी के सौंदर्य का पान करना उसका जल पीना और विशाल धन- धान्य से पूरित इस सरस्वती नदी का जलप्रपात पीने के बाद तुम्हारे मन के भीतर की विकार शुद्ध होने लगेंगे। अतः सरस्वती नदी का उल्लेख वेदों में किया गया है और

वर्तमान हरियाणा में स्थापित कुरुक्षेत्र महाभारत का युद्ध स्थल रहा है। विलुप्त कगार पर सरस्वती नदी अनेक नामों से कई जल धाराओं में बहती है।

हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्कां बन्धुप्रीत्या समरविमुखौ लागंली याः सिषेवे।

कृत्वा तासामभिगममपां सौम्य सारस्वतीना मन्तः शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः॥50

निष्कर्षत: कह सकते हैं रामगिरि पर निर्वासित यक्ष अपने राज्य अलकापुरी जो हिमालय में कैलाश पर्वत में अलकनंदा नदी के तट पर स्थापित अलकापुरी में अपनी वियोगग्रस्त यक्षी को संदेश भेजना चाहता है, परंतु उसे वहां कोई संदेश वाहक नहीं मिलता इसलिए यक्ष मेघों को ही अलकापुरी संदेश भिजवाने का निर्णय लेता है। मेघदूत की रचना दो खंड में विभाजित है पूर्व मेघ में यक्ष मेघ को अलकापुरी जाने का मार्ग बतलाता है। वहीँ दूसरे खंड उत्तर मेघ में मेघ का अलकापुरी पहुंच कर यक्षी को कारुण्य भरा संदेश सुनाता है। महाकवि कालिदास द्वारा रचित मेघदूत में चित्रकूट से कैलाश पर्वत, मानसरोवर की ओर मेघ को भेजा जाता है यहां आम्रकूट पर्वत, विंध्याचल पर्वत और विंध्याचल से होता हुआ उज्जैन महाकाल दर्शन शिप्रा स्नान कुंभ मेले का महत्त्व से आगे बढ़ते हुए देवगिरि पर्वत, देवगिरि से कुरुक्षेत्र और कुरुक्षेत्र से हिमालय की ओर हिमालय से कैलाश पर्वत- मानसरोवर और अलकापुरी की यात्रा को सुंदर काव्यांजलि में प्रस्तुत किया है। इससे स्पष्ट है कि स्वयं कालिदास ने उक्त स्थलों की यात्राएं की हैं। क्योंकि ऋतु अनुसार प्रसंग प्रस्तुति, भिन्न- भिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति का सौम्य शब्दावली में वर्णन एक यायावर ही रच सकता है। अतः मेघदूत में मेघ के यात्रा- वृत्तांत को कवि ने सुंदर शब्दावली में प्रस्तुत किया है।जो प्रत्येक पर्वत श्रंखला के महत्त्व से भली भांति परिचित करवाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1 मुद्रालय, गणपति कृष्णा जी - *मेघदूत महाकाव्यं*- महाकवि कालिदास रचित (सं. 1951) प्रकाशक गणपति कृष्णा जी मुद्रालय, मुंबई

2 सं. दास बी ए, श्याम सुंदर - *राजा लक्ष्मण सिंह अनुवादित मेघदूत*, (1925) इन्डियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग